INDIAN FASHION
SARI IN MYRIAD FORMS : SERIES-2

Fashion is a universal subject, a language understood and spoken by one and all. Fashion is one of the most popular modes of expression. It describes the ever-changing style of clothes worn by those with cultural status. Fashions vary greatly within a society over time and are affected by age, occupation, location and social class.

As part of the *Traditional Parsi Attire*, Parsi women wear the Gujarati sari, but with a few style changes. Parsi women have always brought the palla down over the right shoulder not the left. The traditional Parsi sari made of embroidered fabric is called a *Gara*. Parsi Gara embroidery was a turning point in introducing pagodas and chinamen motifs in embroidery rather than peacocks and paisleys. The Gara is worn after the Sari Perawani or sari wearing ceremony. Parsi brides wear a white ornate gara sari which is generally a family heirloom, passed on from one generation to another. These days, however, off white and pastel shades are also chosen by brides instead of the traditional white. Parsi men wear their long caftan, tied at the waist with a turban around the head.

The *Pathare Prabhus* immigrated from Patan, Gujarat to Mumbai in the 13th century and were among the first few inhabitants of Bombay. They were an ingenious community and were employed in various important positions of the British administration in India with a claim of 100% literacy rate in their community. This special status acquired under the colonial rulers allowed the *Pathare Prabhus* to be included in British Indian society gatherings. Their dressing was also inspired by the English fashion trends of their time. The *Pathare Prabhu* women tailored their blouses with the English puffed sleeves and wore them under their *Kasbis*; a nine-yard sari of satin like material with an intricate border done in pure gold and silver. This was just one of their many innovative ways to keep up with haute couture while still retaining their ethnic aesthetics. Through their distinctive sense of dressing, the Pathare Prabhu women were path-breakers in striking a balance between the old and new world charm; a phenomenon that is woven into the warp and weft of the world of fashion today.

The style of wearing the sari with a blouse often modelled on the Western dress was soon adapted by those from families involved in the social reform movement in Bengal as well as by emancipated families in other parts of the country. Jnanadanandini Devi, belonging to the Tagore household, was deeply influenced by these newly-introduced styles of saris. While living in Bombay, Jnanadanandini Devi socialized in European circles. This required her to dress differently for which the traditional Bengali style of wearing the sari appeared unwieldy. During a tour of Gujarat with her husband, Jnanadanandini improvised upon the sari worn by Parsi women. She created her own style of draping the *'pallu'* over the left shoulder – as opposed to the Parsi style – so that the right hand remained free for courtesies. She even offered to train other women to wear the sari in her novel style. Blouses were elaborate, modelled on current styles prevalent in the West: thus high collars with ribbons, frills, jabots and brooches were popular from the 1870s till the turn of the century. While those from the Brahmo Samaj referred to the new style of wearing the sari as the "Thakurbarir sari" (sari worn in the style of the Tagores, a leading Brahmo family), as more and more Brahmos started wearing the sari in this manner, it came to be popularly known as "*The Brahmika Sari*" throughout India.

Indian fashion often takes its cues from cinema. In fact, the *Silver Screen*, more often than not, is the trendsetter in Indian fashion. Devika Rani was the first lady of Indian Cinema who took the position of Indian Cinema to global standards. Her attire, both in films and sometimes in real life, was considered "risque" at that time. The 1940s was a decade of emerging fashions at the movies and none other than Devika Rani epitomised the essence of 40's style - neat hairdos, pearl jewellery, frills and fancy saris. Ever since the advent of Hindi cinema in the 1930s, Bollywood and sari have gone hand in hand. From old school glamour to modern cinema, the Bollywood actresses have always reinvented the sari and lent glamour to this Indian wear. History and Indian Cinema bear testimony to the fact that the classic vintage sari is evergreen.

Department of Posts is pleased to bring out a set of four Commemorative Postage Stamps with focus on the Sari as part of the second series on the theme, Indian Fashion.

Presenting Indian Fashion - Sari in Myriad Forms: Series 2.......

Credits:

Text	:	Based on material collected from internet sources
Stamps/Miniature Sheet/ First Day Cover/Brochure	:	Shri Suresh Kumar
Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts India

भारतीय फैशन -
साड़ी के विविध रूप : श्रृंखला 2

Indian fashion-
Sari in myriad forms: Series 2

विवरणिका
BROCHURE

भारतीय फैशन
साड़ी के विविध रूप : श्रृंखला-2

फैशन एक वैश्विक अवधारणा है। यह ऐसी भाषा है, जिसे सब समझते और बोलते हैं। फैशन, अभिव्यक्ति के सबसे लोकप्रिय माध्यमों में से एक है। यह सांस्कृतिक रूप से अभिजात्य वर्ग के परिधानों की निरंतर बदलती शैली का नाम है। फैशन, किसी समाज–विशेष में समय के साथ विभिन्न रूपों में सामने आता है और आयु–वर्ग, व्यवसाय, स्थान–विशेष और सामाजिक वर्ग जैसे पहलू इसके रंग–रूप को ढालने और संवारने का काम करते हैं।

पारसी महिलाएं, पारंपरिक पारसी परिधान के तौर पर कुछेक परिवर्तनों के साथ गुजराती साड़ी पहनती हैं। पारसी शैली की खास पहचान यह है कि पारसी महिलाएं आमतौर पर साड़ी का पल्ला बायें कंधे से न लेकर दायें कंधे से लेती हैं। पारंपरिक पारसी साड़ियां कशीदाकारी से सजाए गए कपड़े की होती हैं, जिसे गारा कहते हैं। पारसी गारा कशीदाकारी के अंतर्गत मयूरों एवं बेलबूटों से अलग पगोड़ों और चीनी मूल के प्रतिरूपों का इस्तेमाल आरंभ किया गया। पारसी समाज में गारा साड़ी, साड़ी पहनने के खास समारोह साड़ी पेरावानी के आयोजन के बाद ही पहनी जाती है। पारसी दुल्हनें अत्यंत खूबसूरत सजावट वाली सफेद गारा साड़ी बड़े शौक से पहनती हैं, जोकि पुश्तैनी रूप से पीढ़ी–दर–पीढ़ी उपहार में दी जाती है। हालांकि, इन दिनों परंपरागत सफेद रंग के बजाए धूमिल सफेद (ऑफ–वाइट) और हल्के रंगों की भी साड़ियां खूब पसंद की जाती हैं। पारसी पुरुष लंबा काफ्तान पहनते हैं, जिसे कमर में बांधा जाता है और ये लोग सिर पर पगड़ी भी पहनते हैं।

पठारे प्रभु तेरहवीं शताब्दी में पाटण, गुजरात से मुंबई में आ बसे थे। ये लोग बंबई के पहले निवासियों में से एक थे। पठारे प्रभु अत्यंत परिश्रमी लोग थे और भारत में ब्रिटिश प्रशासन में महत्वपूर्ण पदों पर तैनात थे। इस समुदाय में साक्षरता दर 100% थी। ब्रिटिश शासकों के बीच प्राप्त विशेष दर्जे के कारण पठारे प्रभु समुदाय के लोग भारत में अंग्रेजों के लिए आयोजित सामाजिक समारोहों आदि में भी शामिल होते थे। उनका पहनावा भी उस दौर के अंग्रेजी फैशन से प्रेरित था। पठारे प्रभु समुदाय की महिलाएं अपने ब्लाउज की बाजू अंग्रेजी शैली में अर्थात् कंधे पर फूली हुई (पफ्ड स्लीव्स) सिलवाती थीं और इन्हें कस्बी के साथ पहनती थीं। कस्बी, मखमल जैसे कपड़े (साटिन) की नौ गज की साड़ी का नाम था, जिसके किनारे शुद्ध सोने और चांदी की बारीक तारों की खूबसूरत डिजाइनों से सजाए जाते थे। यह उनका अपना खास तरीका था, जिसके जरिए वे अभिजात्य वर्ग के फैशन के साथ–साथ अपनी पारंपरिक सौंदर्य शैली में तालमेल बैठाती थीं। अपने अनूठे परिधानों के जरिए पठारे प्रभु समुदाय की महिलाएं पुराने दौर और नए दौर की आकर्षक शैलियों के बीच खूबसूरत संतुलन बनाती थीं और यही संतुलन आज के फैशन के दौर के तानेबाने का भी अभिन्न हिस्सा है।

साड़ियों को पश्चिमी पहनावे की तर्ज पर बने ब्लाउज के साथ पहनने की शैली को ऐसे परिवारों में तुरंत अपना लिया गया, जो बंगाल के समाज सुधार आंदोलन से जुड़े थे। साथ ही देश के अन्य भागों के ऐसे परिवारों की महिलाओं ने भी इस शैली को अपनाया, जो उस दौर में कुछ समय पहले ही सामाजिक बंधनों आदि से मुक्त हुए थे। टैगोर परिवार की ज्ञानदानंदिनी देवी नई शैली की इन साड़ियों से काफी प्रभावित थीं। बंबई में रहते हुए ज्ञानदानंदिनी देवी यूरोपीय लोगों से काफी सामाजिक मेलजोल रखती थीं। इसके लिए यह आवश्यक था कि वह अलग अंदाज के परिधान पहनतीं क्योंकि परंपरागत बंगाली शैली में पहनी हुई साड़ी सुविधाजनक प्रतीत नहीं होती। अपने पति के साथ गुजरात के दौरे पर उन्होंने पारसी साड़ी को नए अंदाज में पहनने की शैली विकसित की। उन्होंने पारंपरिक पारसी शैली के विपरीत, पल्लू को बाएं कंधे से लेना आरंभ किया। इसका व्यावहारिक फायदा यह हुआ कि उनका दायां हाथ स्वागत अभिनंदन आदि के लिए खुला रहता था। उन्होंने दूसरी महिलाओं को अपने इस अनूठे अंदाज में साड़ी पहनना सिखाने की भी पेशकश की। इन साड़ियों के ब्लाउज खूबसूरत डिजाइन में तैयार किए जाते थे। इनकी शैली पाश्चात्य फैशन पर आधारित थी। इसलिए इन ब्लाउजों के कॉलर ऊंचे होते थे और इन्हें झालरों, फीतों और अन्य चीजों से सजाया जाता था। ये डिजाइन 1870 के दशक से 20वीं सदी के आरंभ तक लोकप्रिय रहे। ब्रह्म समाज के लोग साड़ी पहनने के इस नए अंदाज को "ठाकुरबाड़ीर साड़ी" (अर्थात ब्रह्म समाज के प्रमुख परिवार, टैगोर परिवार की शैली में पहनी जाने वाली साड़ी) कहते थे। परंतु जैसे–जैसे ब्रह्म समाज में साड़ी पहनने के इस नए अंदाज का चलन बढ़ा, तो देशभर में इसे "ब्रह्मिका साड़ी" के नाम से जाना जाने लगा।

भारतीय फैशन जगत अक्सर सिनेमा की दुनिया से प्रेरणा पाता है। वास्तव में, रुपहले पर्दे ने ही भारतीय फैशन जगत को अक्सर नए अंदाज सिखाए हैं। देविका रानी, भारतीय सिने जगत की पहली अभिनेत्री थीं, जिन्होंने भारतीय सिनेमा को वैश्विक स्तर तक पहुंचाया। फिल्मों के साथ–साथ आम जीवन में भी उनके पहनावे का अंदाज इतना उन्मुक्त और साहसी था कि यह उस दौर की 'शालीनता' की मान्यताओं को चुनौती देता प्रतीत होता था। 40 का दशक, फिल्मी जगत में फैशन के नए–नए अंदाजों के उभरने का दौर था और देविका रानी इसी दौर की खूबसूरत प्रतिमूर्ति थीं। उनकी केश–सज्जा से लेकर मोतियों के आभूषण, फ्रिल और फैन्सी साड़ियां, सब 40 के दशक के फैशन से सराबोर दौर की कहानी कहती थीं। 1930 में भारतीय सिनेमा के जन्म के समय से ही बॉलीवुड और साड़ी का चोली दामन का साथ रहा है। पुराने दौर के ग्लैमर से लेकर आधुनिक सिनेमा तक बॉलीवुड की तमाम अभिनेत्रियों ने साड़ी को नए–नए अंदाज में पहना है और इस विशुद्ध भारतीय परिधान को ग्लैमर के नए–नए रंगों से सजाया है। इतिहास और भारतीय सिनेमा जगत दोनों इस बात के गवाह हैं कि यह क्लासिक परिधान किस कदर सदाबहार है।

डाक विभाग, भारतीय फैशन विषय पर अपनी द्वितीय श्रृंखला के अंतर्गत साड़ी विषय पर केंद्रित चार स्मारक डाक टिकटों का सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

प्रस्तुत है, "भारतीय फ़ैशन–साड़ी के विविध रूप : श्रृंखला–2"

आभार:–

मूलपाठ : इंटरनेट के स्रोतों से संकलित सामग्री पर आधारित ।

डाक टिकट / मिनियेचर शीट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : श्री सुरेश कुमार

विरूपण मोहर : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य वर्ग	: 1200 पैसा (2), 500 पैसा (2)
Denomination	: 1200p (2), 500p (2)
मुद्रित डाक-टिकटें	: 5.0 लाख प्रत्येक
Stamps Printed	: 5.0 Lakh each
मुद्रित मिनियेचर शीट	: 1.1 लाख
Miniature Sheets Printed	: 1.1 Lakh
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक
Printer	: India Security Press, Nashik

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00